

# ساترہ وجاڈف سے زندگی آسان

इन आमाल को हज़ारों नामुरादों और ना टलने वाली परेशानियों  
में घरि अफ़राद ने अपनाया तो वो अपनी मुराद पा गए, लोग  
इन आमाल की बरकत से ऐसे आसूदह हुए, जैसे उन पर  
कभी परेशानियां आई ही ना थीं।

शैख-उल-वजाडफ़ हज़रत हकीम मुहम्मद तारकि महमूद चुगताई دامت برکاتہم

पी-एच-डी (अमरीका)

رحمت الله عليه  
फ़ैज़ ए मुर्शिद: कुतुब-उल्-अक़्ताब हज़रत ख़वाजा सय्यद मुहम्मद अब्दुल्लाह हज़्वैरी

# सत्रह वज़ाइफ़ से ज़िन्दगी आसान

इन आमाल को हज़ारों नामुरादों और ना टलने वाली परेशानियों में घिरे अफ़राद ने अपनाया

तो वो अपनी मुराद पा गए, लोग इन आमाल की बरकत से ऐसे आसूदह

हुए, जैसे उन पर कभी परेशानियां आई ही ना थीं।

(इन आमाल की इजाज़त आम है)

दफ़्तर माहनामा अबक़री

मरकज़ रुहानियत व अम्न 78/3 अबक़री स्ट्रीट नज़्द कुर्तबा मस्जिद

मज़ंग चोंगी लाहौर पाकिस्तान

शैख-उल-वज़ाइफ़ हज़रत हकीम मुहम्मद तारिक महमूद

मज्ज़ूबी चुग़ताई دامت برکاتہم पी-एच-डी (अमरीका)

[contact@ubqari.org](mailto:contact@ubqari.org)

[WWW.UBQARI.ORG](http://WWW.UBQARI.ORG)

[FACEBOOK.COM/UBQARI](https://FACEBOOK.COM/UBQARI)

[TWITTER.COM/UBQARI](https://TWITTER.COM/UBQARI)

## तस्बीह खाने का पैग़ाम

(आमाल से पलने, बन्ने और बचने का यकीन हासिल करना)

अब तक ये सुनते आये कि आमाल और मस्नून ज़िन्दगी से जन्नत मिलती है लेकिन किया इन आमाल से दुन्या भी मिलती है??? जी हाँ! ऐसा आज के पुर फ़ितन दौर में भी मुम्किन है अल्लाह वही है, उसकी ताक़त वही है जो सहाबा رضوان الله عليهم اجمعين और औलिया कराम رحمته الله عليه के दौर में थी दरअसल हमने उस यकीन को छोड़ दिया है जो सहाबा رضوان الله عليهم اجمعين और औलिया कराम رحمته الله عليه का "अल्लाह तआला" के नाम से अपने मसाइल हल करवाने का था, मआरिफ़त की इस हकीक़त को पाना और बिला इम्तियाज़ नफ़रतों की आग में मुहब्बतों का पानी डालने के लिए एक ठंडी आबशार का किरदार अदा करना और बे सुकून और बे चैन इंसानियत के लिए मरहम मुहय्या करना, सारे आलम में सलासिल औलिया (नक्शबन्दी, चिश्ती, कादरी, सहरवर्दी, शाज़ली) को इस्लाफ़ की तर्ज़ पर तय करवाना यही तस्बीह खाना का पैग़ाम व मंशूर है।

## बिस्मिल्लाहि-र-रहमानि-र-रहीम से ज़िन्दगी आसान

आप खुदकुशी करने जा रहे हैं ज़रा ठहरिये.....!!

रोज़गार की परेशानी, रिश्तों की बंदिश, माली मुश्किलात, धरैलू ना चाक़ियां औलाद की नाफ़रमानी, पहाड़ जैसा कर्ज़, ला इलाज बीमारियां, विदेश जाने की ख्वाहिश, हज्ज की तड़प, अपना घर, अपनी सवारी, धरैलू उलझनों का खात्मा, नामुम्किन मुश्किलात का खात्मा अल्ग़रज़ कोई भी हल ना होने वाला मसला हो ८०० बार बिस्मिल्लाहि-र-रहमानि-र-रहीम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ अवल आख़िर ३ मर्तबा दरूद इब्राहीमी रोज़ाना सारा घर या चंद अफ़राद के पढ़ने से अल्लाह तआला की रहमत ऐसी मुतवज्जह होगी कि हर हाल में काम्याबी उस पढ़ने वाले का मुक़द्दर बन जाएगी। ये वज़ीफ़ा ज़िन्दगी का मामूल बना लें।

## खुशबू के फ़ायदे ही फ़ायदे

खुशबू लगाना सुन्नत नबी ﷺ है जो मुस्तक़ल खुशबू लगाएगा रिज़क में बरकत होगी, सेहत व तंदुरुस्ती होगी, इज़ज़त शान व शौकत व वक्रार सर्बुलंदी हर जग़ा मिलेगी। इबादत में खुशूअ खुजूअ मिलेगा। तक्वा का नूर मिलेगा, फ़रिश्तों की महफ़िल नसीब होगी, बेरोज़गार को रिज़क मिलेगा। बेघर को घर, बेदर को दर मिलेगा। रोज़ी बारिश की तरह बरसेगी, तालिब इल्मों को काम्याबी, मियाँ बीवी में मुहब्बत बढ़ेगी, घरेलू नाचाक्रियां ख़त्म होंगी, आपस में मुहब्बतें बढ़ जाएँगी। मुआशरे में इज़ज़त पाएगा। "बरकत वाली थैली" पर खुशबू लगाने से रिज़क बे बहा मिलेगा।

**नोट:** ख़वातीन खुशबू सिर्फ़ घर के अंदर लगाएं घर से बाहर ना लगाएं।

## ११ बार या हफ़ीज़ु (يَا حَفِيْظُ) के अनोखे फ़ायदे

जो शख्स घर से निकलते हुए सवारी पर बैठते हुए या किसी काम की इब्तदा करते हुए ११ बार अल्लाह तआला का सिफ़ाती इस्म "या हफ़ीज़ु" (يَا حَفِيْظُ) पढ़ेगा, हर हादसे की परेशानी और हर दुख से महफूज़ रहेगा चोरी और डकैती से बचा रहेगा और अगर खाने या पीने पर पढ़ कर खाएं पीएं तो हर बीमारी, तकलीफ़, नज़र बद्द, जादू, हसद से हमेशा हिफ़ाज़त रहेगी।

(हफ़ीज़ु (حَفِيْظُ) का मतलब ये है कि अल्लाह रब्बुल् इज़ज़त जब किसी की हिफ़ाज़त का इरादा फ़र्मा लेते हैं तो मौत के मुंह से भी उसे बचा लेते हैं।)

## या क़हहार (يَا كَهَّارُ) से क़हर बरसाएं

जादू जिन्नात जितना पुराना हो, जिन्नात ने ज़िन्दगी तंग कर दी हो, घर वीरानी का नमूना बन गया हो, आमिल मलंग बाबे जब जादू बंदिश और जिन्नात के कड़े को तोड़ ना सकते हों तो ऐसे वक़्त "या क़हहार" (يَا كَهَّارُ) का बकसरत हर हाल में विद करे और आँखों से कुदरत का जल्वा देखें,

दिल बोल उठता है, वाकई ज़िन्दगी माल से नहीं आमाल से बनती है। ला इलाज बीमारियां शुगर, कैंसर, हेपटाइटिस और हर मुश्किल में पढ़ना फ़ौरी असर और नफ़ा रखता है।

[ शरीअत की हुदूद को मद्द नज़र रखने वाले हमेशा काम्याबी की मंज़िलें जल्द तय करते हैं। इस लिए आप हमेशा नैक मक़सद पेश नज़र रखें (ख़वाजा अवैस करनी सानी (رحمت الله عليه))]

## हुस्न व जमाल का कीमती राज़

अल्लाह तआला के सिफ़ाती नाम "या ख़ालिकु या मुसव्विरु या जमीलु" " يَا خَالِقُ يَا مُصَوِّرُ يَا جَمِيلُ " बकसरत या हर नमाज़ के बाद एक तस्बीह पढ़ने से आप कीमती ब्यूटी क्रीमों, लोशन और ब्यूटी पारलर से निजात पाएं। ख़ूबसूरती आप की मुट्ठी में वाकई इस विर्द में है। ख़ूबसूरत औलाद चाहने वाली हामला ख़वातीन हमल के शुरू से रोज़ाना एक तस्बीह या बकसरत पढ़ना शुरू करें और कुदरत की रहमत आँखों से देखें ये विर्द पढ़ने वाला आमाल और इबादात में ख़ूबसूरती और खुशूअ व खुजूअ पाएगा, ये वज़ीफ़ा लड़के और लड़कियों की ख़ूबसूरती का बेहतरीन राज़ है।

## या बाइसु या नूर (يَا بَاعِثُ يَا نُورُ) से दिल नूरानी बनाएं:

जो शख्स सोते वक़्त दिल पर दायां हाथ रख कर अल्लाह तआला के इस्म "या बाइसु या नूर" (يَا بَاعِثُ يَا نُورُ) दोनों मिला कर ग्यारह (११) बार पढ़े गा दिल की बीमारियों सांस की बीमारियों, सीने के तमाम अमराज़ का ख़ात्मा होगा, दिल नूरानी होगा, मुस्तक़ल मिज़ाजी से ज़िक्र तिलावत तस्बीह नमाज़ तहज्जुद की तौफ़ीक़ होगी, इबादत और विलायत के रास्ते आसां होंगे, अगर तालिब इल्म पढ़े याद्दाश्त बेहतर होगी, तालीमी काम्याबी मिलेगी, कश्फ़ और दिल की आँखें खुल जाएँगी, गुनाहों से निजात नसीब होगी।

[रूह की दुन्या बहुत गेहरी है लेकिन दिल की दुन्या इस से ज़्यादा गेहरी है। (कुतुब-उल्-अक़ताब ख़वाजा सय्यद मुहम्मद अब्दुल्लाह हज्वैरी (رحمت الله عليه))]

## वजू के तीन घूँट पानी के करिश्मात

जो शख्स नल्के, टॉटी, तालाब, दर्या, नहर, चश्मा जहाँ से भी वजू करने के बाद तीन घूँट पानी बीमारी, मुश्किल, परेशानी या घरेलू उलझनों की निर्यत कर के लिए गा उसके दिल की मुराद पूरी होगी। बुखार से ले कर कैंसर तक हर लाइलाज बीमारी के लिए ये अमल आखरी इलाज है लेकिन यकीन शर्त है।

## मिस्वाक के करिश्मात

जो शख्स मिस्वाक अपनी जेब में रखेगा एकसीडेंट हादसात से बचा रहेगा। उसकी जेब कभी खाली नहीं होगी, ना गहानी आफ़ात और बलाओं से उसकी हिफ़ाज़त रहेगी। रिज़क में बरकत होगी, चोरी, डाका, और छीना झप्टी से अल्लाह तआला उसे महफूज़ रखेगा। नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने वाले को आखरी वक़्त में कल्मा नसीब होगा। मुंह से नूर निकलेगा, अल्लाह तआला ज़बान और मुंह की आफ़तों से बचाएंगे। बंद आँखों के ऊपर मिस्वाक फेरने से आँखों का नूर सदा रहेगा। आँखों के गुनाहों से निजात मिलेगी।

## नामुम्किन को मुम्किन बनाइये

बे आसरा, ना उम्मीद परेशान हाल मायूस लोगों के लिए एक ऐसा अमल जो सो फ़ीसद कुबूलियत ए दुआ की शराइत पर पूरा उतरता है और लाखों औलिया के मुजर्रब मामूलात में शुमार होता है। आप भी उलटी तदबीरों, बेकार होती कोशिशों और नाकाम होते मंसूबों, पुराने से पुराने जादू जिन्नात, बंदिशों और सख़्त तरीन बीमारियों में आज़माइये.....! इन् शा अल्लाह ये अमल आप को हर आमिल से बेन्याज़ कर के हर मुश्किल से निकलने का रास्ता मुहय्या करेगा और नामुम्किन को मुम्किन बनाएगा।

**तरीका अमल:** अवल व आखिर ३,३ मर्तबा कोई भी दरूद शरीफ़, एक मर्तबा सूरह फ़ातिहा और तीन मर्तबा सूरह इख़लास मअ तस्म्या (बिस्मिल्लाहि-र्-रहमानि-र्-रहीम) (ये पूरा एक अमल हुआ)

इस तरह रोज़ाना ४१ मर्तबा करें। ये एक निसाब शुमार होगा। इस तरह रोज़ाना कई निसाब कर सकते हैं। ४१ या ९१ दिन बिला नागा करें। हर किस्म की बीमारी परेशानी और मुश्किल में कर सकते हैं। नोट: खवातीन अय्याम के दिनों में ना करें बल्कि बाद में दिनों की तअदाद पूरी करें। बा ज़ोक हज़रात ज़िन्दगी का मामूल बना लें तो खैर व बरकत के ठण्डे बादल आप पर हर वक़्त छाए रहेंगे।

**सदका ज़रिया:**बिला रंग व नस्ल दुखी इंसानियत की खिदमत हमारा अज़म है आप भी इस रौशनी को दूसरों तक पोहंचाइये, खुद भी पढ़िए और जेलों, अस्पतालों में मौजूद परेशान लोगों तक पोहंचा कर दाद रसी का ज़रिया बनें।

## सूरह कुरैश पढ़ें और कमाल पाएं

सवारी ना मिलती हो, सफ़र की मुश्किलात हों, गाड़ी खराब हो गयी हो, मोबाइल, मोटर, फ़्रिज या कोई मशीन खराब हो या दुश्वारी हो तो सूरह कुरैश ४१ मर्तबा बमअ तस्म्या अवल व आखिर तीन मर्तबा दरूद इब्राहीमी पढ़ने से मुश्किलात हल हो जाती हैं। हामिला अगर सुबह व शाम एक तस्बीह हमल के शुरू से आखिर तक पढ़े तो डिलीवरी आसान होगी, घर के राशन पर १०१ मर्तबा पढ़ने से बरकत होगी, कभी कमी ना होगी, हमेशा के लिए घर से बीमारियां मुश्किलात खत्म हो जाएंगी, ज़िन्दगी में सुकून, चैन, बरकत और आफ़ियत होगी। हमेशा सुबह व शाम की तस्बीह का विर्द बनाने से काम्याबी मुक़द्दर बन जाएगी, जो शख्स खाने के बाद एक दफ़ा पढ़ेगा खाना बीमारी नहीं बनेगा बल्कि उस खाने से बीमारियां दूर हो जाएंगी। दो बार पढ़ने से दस्तरख्वान हमेशा अच्छा मिलता रहेगा जो तीन बार पढ़ेगा उस की नस्लों में कभी रिज़क खत्म नहीं होगा।

(माल से नहीं आमाल से ज़िन्दगी बनती है अब ये सुनी सुनाई कहानी नहीं बल्कि एक ज़िंदा जावेद हकीकत है अगर आप भी इस हकीकत को पाना चाहते हैं तो तस्बीह खाना कादरी हज्वैरी लाहौर में हर जुमेरात होने वाले दर्स में शिरकत करें। [www.Ubqari.org](http://www.Ubqari.org))

## आखरी ६ सूरतों से मुहब्बत करने का इनाम

जो शख्स अपनी ज़िन्दगी में आखरी छे सूरतों का बिस्मिल्लाह के साथ एहतमाम करता है नमाज़ में या नमाज़ के इलावा, जादू जिन्नात तो उस से ऐसे दूर होते हैं जैसे पानी से आग..... ज़िन्दगी की मुश्किलात हमेशा टली रहेंगी। नस्लें हमेशा आसूदह रहेंगी। सफ़र में पढ़ने से रिज़क में बरकत और सफ़र हमेशा आसान होगा। ख़ैर ख़ैरियत से मंज़िल पर आसानी से पोहंचेगा। हादसात, मुश्किलात और वारदात से महफूज़ रहेगा। सवार, सवारी, अहल व अयाल और घर की हमेशा हिफाज़त रहेगी। अल्लाह तआला की तरफ़ से ज़िन्दगी में ऐसी आसानियां पैदा होंगी कि अक़ल दंग रह जाएगी।

## तीन नाम पढ़ें और चोंक जाएं

जो शख्स अल्लाह तआला के सिफ़ाती नाम "अल्मलिकु अल्कुद्सु अस्सलामु"

(اَلْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ)

इन तीनों का विर्द चलते फिर्ते, वजू बेवजू पढ़ेगा ज़ेर नाफ़ मर्दाना व ज़नाना तमाम पोशीदह तक्लीफ़ों से अम्न पाएगा। नेकी और पाकीज़गी मिलेगी, बुराई बद्ध कारी खुद उस से बचेगी और ज़ेहनी टेंशन, डिप्रेशन का तो आखरी इलाज है। खारिश, छूती बीमारियां और वस्वसों का खात्मा इन लफ़्ज़ों के सामने फ़िल्नों के दौर में अदना चीज़ है। हर नमाज़ के बाद एक तस्बीह भी पढ़ सकते हैं।

## आएं रूहानी गुस्ल से परेशानियां दूर करें

गुस्ल तो हम करते हैं अपने गुस्ल को अगर रूहानी तरीके से करेंगे तो इस के फ़ायदे बहुत ज़्यादा हैं मसलन लाइलाज बीमारियों में मुब्तला हों कोई ऐब छोड़ना चाहते हों, गुस्सा, चिड़चिड़ा पन, डिप्रेशन, टेंशन से छुटकारे का कोई तलबगार हो, घरेलू झगड़े, औलाद की ना फ़र्मानियां, मियां बीवी



की ना चाक़ियां ये गुस्ल खुद करें या किसी और की तरफ़ से भी कर सकते हैं। रोज़ाना दो वक़्त कर लें या एक वक़्त करें चंद दिनों में कमाल देखें।

**तरीक़ा रूहानी गुस्ल:** "रूहानी गुस्ल" का तरीक़ा ये है कि आख़री छे सूरतें मअ तस्म्या अवल व आख़िर ३ दफ़ा किसी भी दरूद शरीफ़ के साथ पढ़ें और इस के बाद बेतुल् ख़ला की दुआ :

"बिस्मिल्लाहि, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल्-खुब्सि वल्-खबाइसि"

(اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبْثِ وَالْخُبَائِثِ)

पढ़ कर बायाँ पाऊँ गुस्ल खाने (wash room) में रख कर अंदर चले जाएं, मस्नून गुस्ल करें, नहाते वक़्त ये दुआ दिल ही दिल में मुसल्लसल पढ़ते रहें, ज़बान से बिल्कुल ना पढ़ें और अपनी हर बीमारी और परेशानी का तसव्वुर करते रहें कि वो भी इस पानी के साथ धुल रही हैं और इस के बाद जब बाहर आए तो सीधा पाऊँ बाहर रखें और फिर इसी तरतीब से आख़री छे सूरतें पढ़ें जैसे पहले पढ़ी थीं। {नोट}: गुस्ल जनाबत की सूरत में नहाने से पहले छे सूरतें ना पढ़ें बल्कि नहाने के बाद जब बाहर आ जाएं तो बाद में पहले की तअदाद भी पूरी कर लें।

## अफ़हसिब्तुम और अज़ान का अमल

दम तोड़ती आरज़ूओं, तड़पते अरमानों, सुलगती ख़्वाहिशों, खान्दानी झगड़ों, रिज़क हलाल से महरूमि, लाइलाज बीमारियों और जादू, सरकश जिन्नात के असरात में ये अमल कितना कारगर है आप खुद हैरान हो जाएंगे। इस की फ़ज़ीलत के बारे में अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رضى الله عنه) की रिवायत में है कि अगर कोई शख्स दिल के यकीन के साथ (सूरह मोअमिनून की) इन आयात को पहाड़ पर पढ़े तो वो भी अपनी जगा से टल जाए। (कंज़ुल्-अमाल, तफ़सीर मज़हरी)

**तरीक़ा अमल:** सूरह मोअमिनून (प १८) की आख़री चार आयात सात मर्तबा और अज़ान सात मर्तबा पढ़ कर दाएं कान का तसव्वुर कर के दाएं कंधे पर और बाएं कान का तसव्वुर कर के बाएं कंधे पर मरीज़ खुद दम करे और सारा घर दम करे और अगर मरीज़ सामने मौजूद ना हो तो तसव्वुर में सारा घर या जितने ज़्यादा अफ़राद करेंगे फ़ायदा उतना ही ज़्यादा होगा। ये अमल हर

घंटे या आधे घंटे के बाद करें, हर नमाज़ के बाद भी कर सकते हैं और सिर्फ़ सुबह व शाम भी कर सकते हैं। वज़ू बेवज़ू कर सकते हैं।

नोट: ख़वातीन अय्याम के दिनों में अफ़हसिब्तुम का अमल ना करें बल्कि उन की तरफ़ से कोई दूसरा अमल करे ता कि अमल में कमी ना हो अल्बत्ता अज़ान का अमल कर सकती हैं।

(अज़ान और अफ़हसिब्तुम का जोड़ असर, ताक़्त्वर और पूरी दुनिया में कहीं पर भी मुअस्सर करिशमाती अमल के हैरत अंगेज़ सच्चे मुशाहिदात और दलाइल जान्ने के लिए किताब "अफ़हसिब्तुम और अज़ान के करिशमात" का मुतालिआ फ़र्माइए)

## बरकत वाली थैली से मालदार बनिए

गुज़श्ता दौर के सहाबा व अहले बैत رضوان الله اجمعين, औलिया कराम رحمت الله عليه की ज़िन्दगी में बरकत थी जहाँ आमाल सालेह थे वहाँ बरकत वाली थैली भी उन की साथी थी। हज़रत हकीम साहब की खुसूसी दम की हुई बरकत वाली थैली मुफ़्लिस, ग़रीब, नादार, तंगदस्त और क़र्ज़ों में डूबे हुआँ के लिए एक अन्मोल तोहफ़ा और खज़ाना है। आप तमाम रक़म थोड़ी हो या ज़्यादा इसी में रखें और निकालते और डालते वक़्त तस्म्या के साथ एक बार सू़रह कौसर पढ़ लें कभी बरकत और रक़म ख़त्म नहीं होगी। मर्द अपने साथ रख सकते हैं, औरतें अपने पर्स में रख सकती हैं, घर में भी रख सकते हैं। रोज़ाना १२९ दफ़ा सुबह व शाम सू़रह कौसर मअ तस्म्या अवल व आखिर सात मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़ कर इसी थैली पर दम कर दें, ये अमल दिन में एक बार भी कर सकते हैं लेकिन अगर दो बार करें तो नफ़ा ज़्यादा होगा। जितना गुड़ उतना मीठा। अगर तमाम उम्र का मामूल बना लें तो फिर कमाल देखें। वज़ू बेवज़ू दोनों हालतों में कर सकते हैं लेकिन बावज़ू बरकत ज़्यादा होगी।

सू़लल्लाह ﷺ ने फ़र्माया कि तुम किसी भाई की मुसीबत पर खुशी का इज़हार मत करो। (अगर ऐसा करोगे तो हो सकता है) अल्लाह उस को उस मुसीबत से निजात दे दे और तुम को मुब्तला कर दे।

(जामिया तिर्मिज़ी)

## बगैर कैश के ज़िन्दगी का ऐश

اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عَيْدًا إِلاَّ وَوَلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ

(सुरة المائدة آیت 114)

"अल्लाहुम्म रब्बना अन्ज़िल् अलैना मा-इदत-म्मिन-स्समा-इ तकूनु लना ईदल्लि-अव्वलिना व आखिरिना व आयत-म्मिन्क वर्जुक्ना व अंत खैरु-र्राज़िकीन०

(सूरह अल्-माइदह आयत ११४)

इस कुरआनी दुआ के पढ़ने वाले को अल्लाह पाक गैबी रिज़क अता फ़र्माते हैं, खैर व बरकत अता फ़र्माते हैं जहाँ कहीं से रिज़क का कोई वसीला नज़र ना आ रहा हो, मायूसी और ना उम्मीदी की अथाह गेहराई में घिरे शख्स पर से परेशानी दूर हो जाती है, उस शख्स का दस्तरख्वान निहायत ही वसीअ हो जाता है, अल्लाह पाक के फ़ज़ल व करम से नस्लों के लिए रिज़क और बरकत का सामान हो जाता है। रमज़ान शरीफ़ में अफ़्तारी के वक़्त पढ़ना रिज़क के दरवाज़े खुलवा देता है। तरीका अमल: अवल व आखिर ताक अदद दरूद शरीफ़ तीन, पांच या सात मर्तबा पढ़ कर ग्यारह मर्तबा ये कुरआनी दुआ पढ़ कर आसमान की तरफ़ मुंह कर के फूँक मारें और अल्लाह पाक से दिल ही दिल में दुआ मांग लें। ज़िन्दगी भर इस अमल का मामूल रखें दिन में कई बार भी कर सकते हैं, रमज़ान-उल-मुबारक में अफ़्तारी से पहले करें।

(आइए! हम बिना तफ़ीक़ रंग व नस्ल, इलाके, ज़बान, मस्लक और मज़हब की क़ैद से हट कर इंसानियत के लिए आसानियां फैलाने वाले बन जाएं और अम्न की शमआ रोशन करें।)

(मरकज़ रूहानियत व अम्न अबक़री ट्रस्ट रजिस्टर्ड लाहौर)

## हर मुश्किल की तबाही रूहानी एटम बम से

आज के साइंसी दौर में हर इंसान मुश्किलात का शिकार है। कुछ वाक्यात ग़ैर इरादी तौर पर होते हैं और कुछ इरादतन किये जाते हैं उन ग़ैर मामूली वाक्यात के ज़रिये इंसान रुकावटों और गर्दिशों के चक्कर में फँस जाता है। वो अपना तमाम असासा (सेहत, रुपया, तअल्लुकात, मुहब्बत और ज़ात) दाओ पर लगा देता है। उसे अपनी किस्मत पर शक होने लगता है। (शादी, कारोबार, रिश्ता ना आना, रिश्तेदारों की मुखालिफ़त, रोक टॉक, शैतानी असरात) क्या किसी ने कुछ कराया तो नहीं दिया या मेरे ही साथ ऐसा क्यूँ होता है??? ऐसे तमाम लोगों के लिए दो कुरआनी अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल इस्म आज़म

(اِسْمُ لَا يُصْرُوْنَ)

"हा-मीम ला युन्सरून" पेश है। वज़ीफ़ा मुख्तसर लेकिन आज के साइंसी और मादी दौर में इस की तासीर एटम बम से भी ज़्यादा है। पढ़ें और खुद आज़माएँ।